शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०९-२०१८

वर्ष - २९ अंक - ९ सितम्बर २०१८ विक्रम संवत् २०७५ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

हिन्दू तन मन
हिन्दू जीवन
रग रग हिन्दू
मेरा परिचय
- अटल बिहारी वाजपेयी

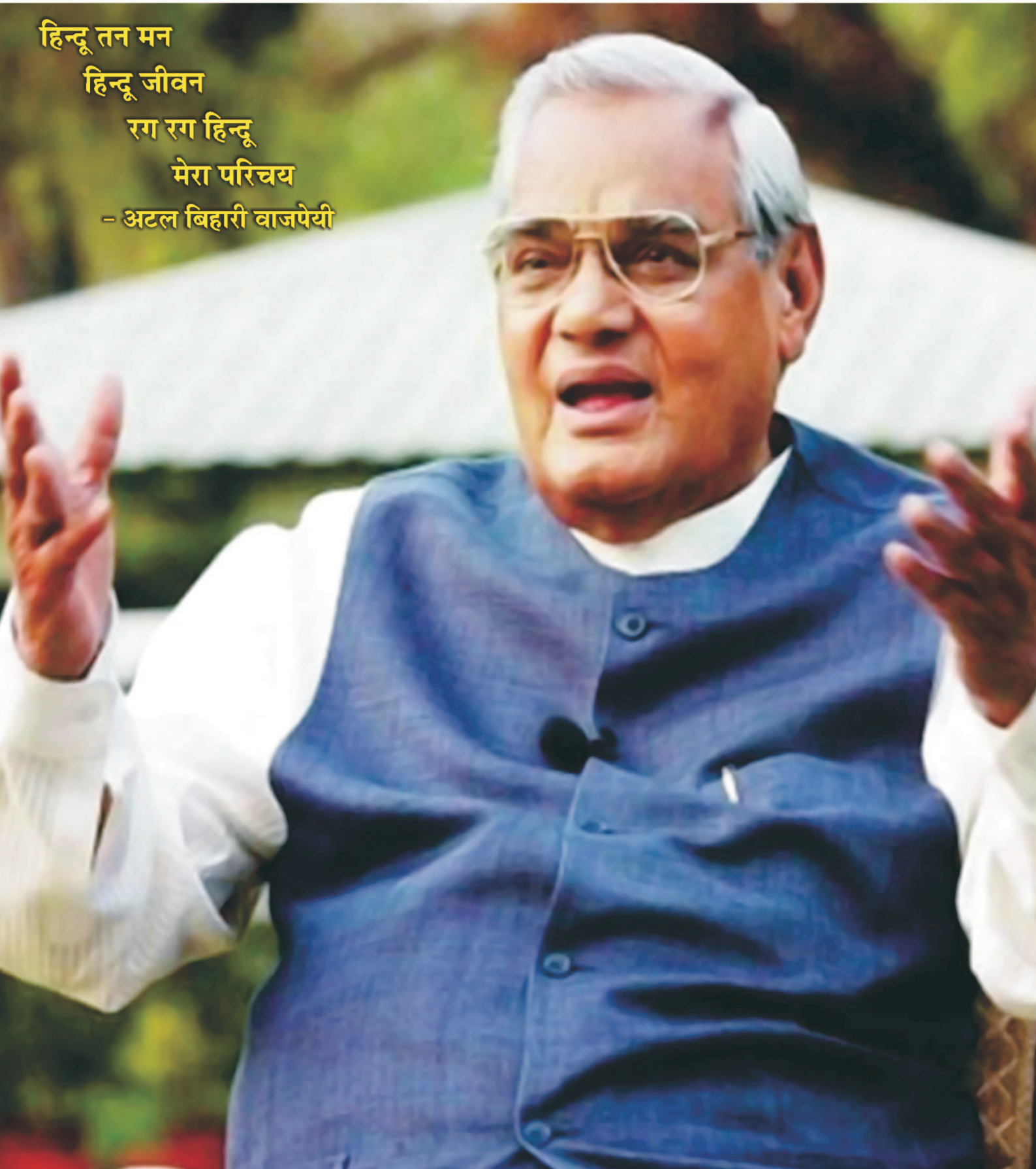

अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन के दु:खद अविस्मरणीय क्षण

केरल बाढ़ पीड़ितों के राहत कार्य में जुटा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

सुभाषित

अष्टौ गुणा पुरुषं दीपयंति, प्रज्ञा सुशीलत्वदमौ श्रुतं च।
पराक्रमश्चबहुभाषिता च, दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥

अर्थात्- आठ गुण पुरुष को सुशोभित करते हैं— बुद्धि, सुन्दर चरित्र, आत्म-नियंत्रण, शास्त्र-अध्ययन, साहस, मितभाषिता, यथाशक्ति दान और कृतज्ञता।

संपादकीय

हमारी सदियों पुरानी कालगणना ग्रह-नक्षत्रों की गति तथा अन्य खगोलीय घटनाओं के माध्यम से निकट भविष्य में घटित होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं का संकेत देती रही है। क्रूर नियति की अटल सत्ता के अधीन होने से भले ही हम कुछ कर नहीं पाते, किन्तु हमें समय रहते सूचना मिलने का लाभ अवश्य लेना चाहिए।

गत माह के खग्रास चन्द्रग्रहण से अब तक जन धन की जो हानि हुई है, वह अपूरणीय क्षति है। अनेक क्षेत्रों की प्रतिष्ठित विभूतियों को खोने के साथ ही केरल की आपदा हमारे सामने है। सच्चे राष्ट्रभक्त, समर्पित स्वयंसेवक, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, लोकतान्त्रिक मूल्यों के स्थापक तथा प्रधानमंत्री के रुप में हमारे पृथक राज्य के निर्माता अटल जी के बताए मार्ग पर चल कर, उनके सिद्धान्तों को आत्मसात करने के साथ-साथ उनके सपनों का राष्ट्र बनाने में योगदान देकर हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

केरल सहित अन्य स्थानों की प्राकृतिक आपदा को हम सबने मिलकर सहन किया है। ऐसे समय में हरसंभव सहायता के अपने अनुष्ठान में हमने कोई कमी नहीं होने दी है। संकट के ऐसे समय में अटल जी की ये पंक्तियाँ हमारा संबल होती हैं :—

बाधाएं आती हैं आएं, घिरें प्रलय की ओर घटाएं,
पावों के नीचे अंगारे, सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं,
निज हाथों में हँसते-हँसते, आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा...

ए महिना के तिहार

ए महीना के पहिली तिहार पहिलीच तारीक के कमरछठ परिही तेकर पाछू तीन तारीक के कन्हैया आठे (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी) हवय। बारा तारीक के हरितालिका तीज (तीजा) के उपास अऊ तेरा तारीक के गनेस भगवान आही। सतरा तारीक के महालक्ष्मी के उपास सुरु होही अऊ तेईस तारीक के गनेस भगवान ठंडा करे के चौदस (अनन्त चौदस) परिही। महिना के पहिली एकादसी (जया) छह तारीक अऊ दूसर एकादसी (पदमा) बीस तारीक के परिही।

हरछठ (कमरछठ)	**- भाद्रपद कृ. 06**	**- 01 सितम्बर**
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	**- भाद्रपद कृ. 08**	**- 03 सितम्बर**
जया एकादशी	**- भाद्रपद कृ. 11**	**- 06 सितम्बर**
हरितालिका तीज	**- भाद्रपद शु. 03**	**- 12 सितम्बर**
श्रीगणेश स्थापना	**- भाद्रपद शु. 04**	**- 13 सितम्बर**
महालक्ष्मी व्रतारम्भ	**- भाद्रपद शु. 08**	**- 17 सितम्बर**
पदमा एकादशी	**- भाद्रपद शु. 11**	**- 20 सितम्बर**
श्रीगणेश विसर्जन (अनंत चतुर्दशी)	**- भाद्रपद शु. 14**	**- 23 सितम्बर**

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग नौ तारीक के भारतेंदु हरिश्चन्द्र, दस तारीक के गोविन्द वल्लभ पंत अऊ छब्बीस तारीक के ईश्वरचंद विद्यासागर के जयंती हवय। ग्यारा तारीक के महादेवी वर्मा अऊ गजानन माधव मुक्तिबोध, पन्द्रा तारीक के कुप्प. सी. सुदर्शनजी अऊ सत्ताईस तारीक के राजा राममोहन राय के पुण्यतिथि घलौ हवय।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म पांच तारीक के शिक्षक दिवस, आठ तारीक के विश्व साक्षरता दिवस, चउदा तारीक के हिन्दी दिवस, पन्द्रा तारीक के अभियंता दिवस, सत्ताईस तारीक के विश्व पर्यटन दिवस अऊ उनतीस तारीक के विश्व हृदय दिवस घलौ मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार - जय माँ भारती।

22 अगस्त को मुंबई के परेल क्षेत्र की 17 मंजिला क्रिस्टल टावर में लगी आग में 12वीं मंजिल पर फंसे 13 लोगों को 10 साल की बच्ची ने बचाया

मैं सबको गैलरी में लेकर गई, गीले रुमाल और कॉटन से एयर प्यूरीफायर बनाए और कहा कि, उन्हें मुंह पर रखकर सांस लो...

— जेन गुणरतन सदावर्ते

''जब आग लगी तो मैं अपने परिवार के साथ बिल्डिंग की 12वीं मंजिल पर ही थी। फ्लोर पर काला धुंआ भरते ही लोग घबराने लगे। मुझे स्कूल में कुछ फायर सेफ्टी टिप्स सिखाए गए थे। वो मुझे याद थे। मेरी मां ने कहा कि हमें किचन में जाना चाहिए, लेकिन मैं अपने परिवार वालों और फ्लोर पर मौजूद बाकी सभी लोगों को गैलरी में ले गई। फिर मैंने सबसे कहा कि रुमाल और कॉटन गीले कर लो, ये एयर प्यूरीफायर के काम करेंगे। फिर हम सबने मुंह पर गीले रुमाल और कॉटन रख लिए। सबने मेरी बात मानी और ऐसा ही किया। उन्हें सांस आई तो कुछ हड़बड़ाहट कम हुई। मैंने सीखा था कि जब कार्बन डाईऑक्साइड ज्यादा हो जाए तो मुंह पर गीला कपड़ा रखना चाहिए। इससे सांस लेते समय धुआँ अंदर नहीं जाता। थोड़ी देर बाद फायर फाइटर्स ने हमें नीचे आने के लिए कहा, तो मैंने उनसे कहा कि हम नीचे नहीं आ सकते। यह बहुत घबराहट पैदा करेगा और हमें सामान्य रूप से सांस भी नहीं लेने देगा। कुछ देर बाद फायर फाइटर्स ने किसी तरह ऊपर आने का इंतजाम कर लिया। फिर हमें नीचे उतारा गया। मेरे साथ बिल्डिंग में फंसे सभी 13 लोग पूरी तरह सुरक्षित हैं। इस तकनीक से हमारा दम घुटने से बच गया।''

प्रेरक प्रसंग

श्रीकृष्ण की महिमा

''क्या तुम जानते हो, श्रीकृष्ण का रंग नीला क्यों है ?'' विद्यार्थियों की परीक्षा लेने के लिए संन्यासी ने प्रश्न किया। यह प्रश्न सुनकर सब दंग रह गये। किसी को उत्तर सूझ नहीं रहा था तभी एक विद्यार्थी खड़ा हुआ और बोला– ''स्वामी जी, श्रीकृष्ण का नीला रंग अनन्तता का प्रतीक है।'' संन्यासी ने पूछा– ''तुम यह कैसे कह सकते हो ?'' विद्यार्थी ने बड़े सुन्दर ढंग से अपने कथन की पुष्टि करते हुए समझाया– ''जिस प्रकार नीला आकाश और नीला सागर अनन्त है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण की महिमा भी अनन्त है। अत: उनका रंग भी नीला है।'' विद्वान् संन्यासी ही नहीं, उपस्थित सभी लोग उत्तर सुनकर आनन्द से गदगद हो उठे। विद्वान् संन्यासी और कोई नहीं, स्वामी विवेकानंद थे और उत्तर देने वाला बालक ही आगे चलकर राजनीति और हिन्दू धर्म के व्याख्याता के रूप में प्रसिद्ध हुआ, जिन्हें हम चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के नाम से जानते हैं।

स्वयंसेवक 'अटल'

— नरेन्द्र सहगल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक अटल बिहारी वाजपेयी बाल्यकाल से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक अपने स्वयंसेवकत्व पर अटल रहे, संघ का स्वयंसेवक अर्थात् अपने संगठन, समाज और राष्ट्र के हित में स्वयं की प्रेरणा से नि: स्वार्थ भाव से निष्ठापूर्वक निरंतर काम करने वाला आदर्श नागरिक, 15 वर्ष की आयु में डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर के छात्रावास की संघ शाखा में अपना संघ जीवन प्रारम्भ करने वाले अटल जी को वामपंथी विचारधारा से प्रभावित छात्र नेता के रूप में प्रस्तुत करने वाले कुछ बुद्धिजीवियों को पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। अपने विद्यार्थी जीवन में छात्रों का नेतृत्व करते रहे, यह सत्य है परन्तु वामपंथी कभी नहीं हुए। उन दिनों कानपुर में अनंत रामचन्द्र गोखले नाम के एक संघ प्रचारक ने उन्हें शाखा कार्यकर्ता के रूप में तैयार किया था। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार द्वारा नागपुर से भेजे गए एक संघ प्रचारक भाऊराव देवरस और उत्तर प्रदेश के ही एक प्रचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के संपर्क में आने से अटल जी संघ-प्रचारक बने।

अटल जी ने अपना सार्वजनिक जीवन संघ के स्वयंसेवक के नाते स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी करते हुए प्रारम्भ किया था। 'भारत छोड़ो आंदोलन' में विद्यार्थियों का नेतृत्व करते हुए उन्होंने सत्याग्रह किया और गिरफ्तार होकर आगरा जेल में लगभग एक महीने तक बंद रहें। संघ की शाखा में रोज जाना वे कभी नहीं भूलते थे। शाखा के समय अपने परिवार में होने वाले उत्सवों इत्यादि को छोड़कर वे निक्कर पहन कर शाखा के लिए भाग जाते थे। एक बार इनके बड़े भाई ने शाखा में जाने से रोकने के लिए घर के बाहर के दरवाजे पर ताला लगा दिया। अटल जी घर की छत से कुदकर शाखा में पहुंच गए। इस तरह से इनके स्वयंसेवकत्व की बुनियाद मजबूत हुई।

संघ के वैचारिक आधार, कार्यपद्धति एवं उद्देश्य से प्रभावित होकर अटल जी ने जीवन भर अविवाहित रहकर संघ प्रचारक के रूप में अपने राष्ट्र की सेवा करने का निश्चय किया और संगठन की योजनानुसार शाखाओं के विस्तार का कार्य सम्भाल लिया। सन् 1952 में भारतीय जनसंघ की स्थापना के लिए संघ के जिन युवा प्रचारकों को योजनाबद्ध राजनीति में भेजा गया, उनमें अटल जी भी थे। राजनीति में उतरते ही अपनी प्रतिभा को अपने पुरुषार्थ से मुखर करने वाले अटल जी ने राष्ट्रधर्म मासिक और पांचजन्य साप्ताहिक जैसे राष्ट्रवादी पत्रों को प्रारम्भ किया। वे स्वयं इन पत्रों के सम्पादक रहे। आज ये दोनों पत्र राष्ट्रीय स्तर के सम्मानित राष्ट्रवादी पत्र बन चुके हैं। इन्हीं दिनों अटल जी ने वीर रस की देशभक्ति से लबालब कविताएं लिखनी शुरु कर दी। उनकी कुछ कविताओं से पता चलता है कि वे वामपंथी विचारों से कोसों दूर थे। हिन्दुत्व, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारत की सनातन संस्कृति के ध्वजवाहक वे प्रारम्भ से ही रहे।

उनकी चार कविताओं से उनके भीतर की राष्ट्रवादी चिंगारियों को देखा और समझा जा सकता है। 1. हिन्दू तन मन, हिन्दू जीवन, रग रग हिन्दू मेरा परिचय, 2. गगन में लहरता है भगवा हमारा, 3. जयचंद तूने देश को बर्बाद कर दिया, गैरों को लाकर हिन्द में आबाद कर दिया, 4. एक दिन भी जी मगर तू ताज बनकर जी, अमरयुग गान बनकर जी, अटल विश्वास बनकर जी। यही विचारधारा अटल जी को प्रधानमंत्री बनने तक और प्रधानमंत्री रहते हुए प्रेरणा देती रही।

राजनीति में अटल जी कितने सतर्क तथा कर्तव्यनिष्ठ स्वयंसेवक बने रहे, इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। 1973 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने एक गोपनीय बैठक में संघ पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय ले लिया। अटल जी को इसकी भनक लग गई। वे तुरन्त संघ कार्यालय झंडेवाला में रात्रि लगभग 11 बजे पहुंचे और सभी प्रमुख संघ अधिकारियों को सतर्क कर दिया। इतना ही नहीं तत्कालीन सरसंघचालक पू. बालासाहब देवरस जी तक भी सूचना पहुंचा दी। बालासाहब ने तुरन्त एक बयान जारी कर दिया, 'हम इस प्रतिबंध को हलके से नहीं लेंगे, इसका डटकर प्रतिकार किया जाएगा'। रात-रात में ही सारे देश के संघ कार्यकर्ताओं को संभलने की सूचना पहुंचा दी गई। इस गुप्त सरकारी फैसले के लीक होने से श्रीमती इंदिरा गांधी की संघ को कुचल देने की साजिश विफल हो गई। इसके 2 वर्ष के बाद 1975 में जब इंदिरा जी ने अपनी सत्ता बचाने के लिए देश में आपातकाल की घोषणा कर दी तो अटल जी गिरफ्तारी के बाद जेल में रहते हुए भी आपातकाल का विरोध कर रहे कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाते रहे। उन्होंने एक संदेश लिखकर बाहर कार्यकर्ताओं के पास भेजा। जिसका शीर्षक था— ज्योति जलाए रखो, अर्थात् संघर्षरत रहो। 19 महीने के बाद जब चुनावों की घोषणा हुई तो अटल जी की सहमति से सभी विपक्षी दलों ने मिलकर जनता दल का गठन किया। जनसंघ के कई कार्यकर्ता अपने दल के विसर्जन के पक्ष में नहीं थे। तब अटल जी ने एक बयान जारी कर के सबको शांत कर दिया— ''जनसंघ 25 वर्ष का हो गया है, हम ब्रह्मचारी आश्रम से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर रहे हैं, यही राष्ट्र के हित में है''।

चुनाव में जनता दल के बहुमत में आने पर प्रधानमंत्री बनने के लिए जीवनभर कांग्रेसी रहे बाबू जगजीवन राम ने अपनी दावेदारी ठोक दी। वे मोरारजी देसाई के पक्ष में नहीं थे। जब जगजीवन राम जी नहीं माने तो यह काम अटल जी ने अपने हाथ में लिया। नीति निपुण, कूटनीतिज्ञ और व्यवहार कुशल अटल जी ने जगजीवन राम से अकेले में कहा ''आप अपना दावा वापस लेकर मोरारजी भाई को अपना समर्थन दे दें। आपने तो मात्र एक माह पहले ही कांग्रेस छोड़ी है, पूरे आपातकाल में तो आप इंदिरा जी की तानाशाही पर मोहर लगाते रहे, आपके अड़ जाने से देशभर में गलत संदेश जाएगा'', अटल जी की इस बेबाक परन्तु प्रेमपूर्वक कही गई बात के आगे बोलने की हिम्मत बाबू जगजीवन राम की नहीं हुई और उन्होंने मोरारजी भाई का समर्थन कर दिया।

केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद जब संघ के संदर्भ में दोहरी नागरिकता का विषय गर्म हुआ तो अटल जी ने स्पष्ट कह दिया ''**संघ हमारी मातृ संस्था है, विवाह हो जाने पर माता और पुत्र के संबंध समाप्त नहीं होते, संघ के स्वयंसेवक राजनीति में आकर अपने राजनीतिक संगठन की मर्यादाओं में रहते हैं, परन्तु मूल आधार को छोड़ने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता, हमारा स्वयंसेवक बने रहने का अधिकार कोई नहीं छीन सकता।**'' जनता पार्टी की सरकार टूटने पर जब भारतीय जनता पार्टी का निर्माण हुआ तो इसके पहले अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी ने आंखों में आंसू भरकर घोषणा की ''हमें अपने ही द्वारा बनाए गए जनसंघ को विसर्जित करते हुए दुख हो रहा है - परन्तु यही राष्ट्र के हित में है - दलों के दलदल से कमल खिलकर बाहर आ गया है।''

वर्षों बाद जब अटल जी प्रधानमंत्री बने तो उस समय भी उन्होंने अपने स्वयंसेवकत्व पर आंच नहीं आने दी। अपने मूल आधार पर कायम रहते हुए उन्होंने गठबंधन सरकार के धर्म को निभाने में सफलता प्राप्त की। यद्यपि संघ द्वारा मार्गदर्शित संस्थाओं— विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ और स्वदेशी जागरण मंच के साथ उनके मतभेद रहे परन्तु उन्होंने कभी मनभेद को स्थान नहीं दिया। यहां हम कह सकते हैं कि उन्होंने एक वरिष्ठ स्वयंसेवक के नाते संघ और भाजपा में समन्वय स्थापित करने का सफल प्रयास किया,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सतत सन्नद्ध

अटल जी ने राजनैतिक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा

— अशोक टंडन

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के इस दुनिया से विदा होने से, भारतीय राजनीतिक गगन का एक अद्‌भुत सितारा लुप्त हो गया। वे समाज के सभी वर्गों में समान रूप से लोकप्रिय थे। इसमें दो राय नहीं कि अटल जी के नेतृत्व में छह साल तक चली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार का कार्यकाल 'सुशासन' का युग माना जाता है।

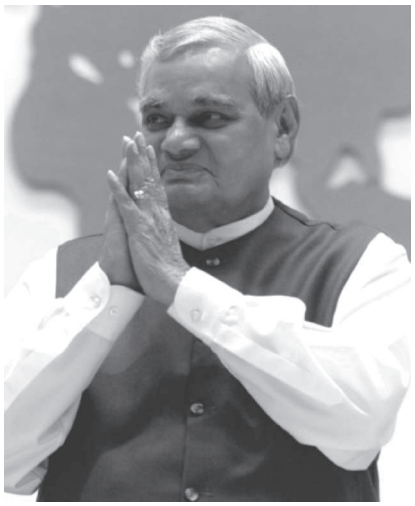

अटल जी के कार्यकाल में देश परमाणु शक्ति सम्पन्न बना, आर्थिक क्षेत्र में लगातार प्रगति हुई, महंगाई पर काबू बना रहा, विदेशी मुद्रा भंडार तेजी से बढ़ा और पूंजी निवेश की भी कमी नहीं रही। लेकिन अटल जी जैसे प्रतिभावान व्यक्तित्व को केवल राजग सरकार के सफल प्रधानमंत्री के दायरे में रखकर आंकना इस युगपुरुष के साथ अन्याय होगा। अटल जी सदा बहुआयामी प्रतिभा के धनी व सबको साथ लेकर चलने वाले राजनेता के रूप में जाने जाते रहे हैं। उनका लंबा संसदीय अनुभव राजनैतिक क्षेत्र में काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उदाहरण रहा है।

25 दिसंबर, 1924 को ग्वालियर के एक साधारण परिवार में जन्में अटल को कविता लिखना और पढ़ना अपने स्कूल अध्यापक पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी से विरासत में मिला था। बाल्यकाल से ही उनकी रुचि सामाजिक कार्यों में थी, जिसके चलते वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आये और 1942 के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया था। अटल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहते हुए पत्रकार बने और 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना के साथ राजनीति में आये। उन्हें दल के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का राजनैतिक सहायक नियुक्त किया गया।

1957 में वे उत्तर प्रदेश के बलरामपुर से चुनाव जीतकर लोकसभा में पहुंचे और 47 वर्ष तक सांसद रहे। कुल मिलाकर वे ग्यारह बार लोकसभा और दो बार राज्यसभा के लिए चुने गए थे। 1977 में श्री वाजपेयी मोरारजी देसाई के नेतृत्व वाली जनता पार्टी की सरकार में विदेश मंत्री बने। उनका यह कार्यकाल तीन प्रमुख उपलब्धियों के लिए लंबे समय तक याद किया जाता रहा, देशभर में पासपोर्ट की सुविधा प्रदान कराए जाने की पहल, पाकिस्तान सहित सभी पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने की नीति और संयुक्त राष्ट्र संघ में पहली बार हिन्दी में भाषण।

अटल जी ने अपने राजनैतिक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे। उन्हें दो बार लोकसभा चुनावों में हार का भी सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। अटल जी ने एक मंजे हुए सांसद, एक ओजस्वी वक्ता के साथ-साथ कवि हृदय के रूप में भी अपनी पहचान बनाते हुए देश के राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उनके संसद में दिए गए भाषण उनके समकालीन एवं नई पीढ़ी के सांसदों के लिए सदा प्रेरणास्रोत रहे हैं। अटल जी का लोकसभा में दिया गया पहला भाषण इतना प्रभावशाली था कि तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने अनायास यह टिप्पणी कर उनका मनोबल बढ़ाया कि ''यह नौजवान एक दिन देश का प्रधानमंत्री बनेगा''।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सबसे दोस्ती, सबसे प्यार

अटल बिहारी वाजपेयी हमेशा इस बात के पक्षधर रहे कि भारत की अकूत क्षमताओं को सही दिशा में लगाया जाना चाहिए। केवल शिकायत करने से कोई बदलाव नहीं आएगा। भारत की प्रगति के लिए हर एक को अपना योगदान देना होगा

— शक्ति सिन्हा

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ काम करते हुए या उनके निकट रहते हुए मैं भारत, भारतीय मूल्यों और भारतीय परंपराओं में उनकी प्रखर आस्था से हमेशा अभिभूत रहा। प्रांत, भाषा, आस्था आदि से परे राष्ट्र के लिए उनकी भावना अद्वितीय थी। उनकी एक और बात जो मुझे बहुत भाती थी, वह था उनका यह विश्वास कि भारत ने बहुत समय गवां दिया है और अब इसे तेजी से गरीबी दूर करके सभी नागरिकों को बेहतर जीवन देने और जीवन के सभी क्षेत्रों में अब तक अनदेखी रही क्षमता का दोहन करने हेतु बढ़ना होगा। उनका हमेशा मानना रहा कि भारत एक ताकतवर राष्ट्र है और दुनिया में उसका वह गौरवमय स्थान होना चाहिए, जिसके वह योग्य है। उनके सभी प्रयास बुनियादी तौर पर इसी उद्देश्य को समर्पित थे।

संगठन की दृष्टि से भी वे बहुत दृढ़ व्यक्तित्व वाले थे, पार्टी बैठकों और कार्यक्रमों पर बहुत ध्यान देते थे, लेकिन उन्होंने कभी पार्टी के अंदर गुटबाजी का समर्थन नहीं किया। पार्टी की नीतियों में उनकी बहुत दृढ़ आस्था थी। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक दलों तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों से अच्छे संबंध बनाए थे। राज्यों में भी विभिन्न विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले नेताओं से उनके अच्छे संबंध थे। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया था और वे जहां जाते, वहीं लोगों से घुलते-मिलते थे। मैं जब भी उनके साथ गया, मैंने सुदूर क्षेत्रों में भी, ऐसे बहुत से लोग देखे जिनका उनसे लंबे समय से संबंध रहा था। वे हर व्यक्ति से खुलकर मिलते थे।

वे हमेशा मदद के लिए तैयार रहते थे। व्यक्तिगत मामलों में भी वे हमेशा मददगार रहे थे। एक बार हमारे संयुक्त सचिवों में से एक की पत्नी को कैंसर हुआ तो उन्होंने उसके लिए अच्छे उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित की थी। जो कोई भी उनके पास मदद के लिए जाता था, वे उसकी समस्याएं दूर करने की कोशिश करते थे। बहुत दयालु स्वभाव के थे वे।

संसद सदस्य बनने के साथ ही विदेश नीति उनका प्रिय विषय रहा था। ऐसे विषयों में होने वाली बहसों में वे विशेष रुचि दिखाते थे। विपक्ष में रहते हुए भी संसदीय कार्यवाहियों में वे गहरी दिलचस्पी लेते थे। अटल जी विदेश मामलों की स्थायी समिति के अध्यक्ष रहे थे। लेकिन उन्होंने कभी ऐसा कुछ नहीं किया जिससे विदेश मामलों पर सरकार को नीचा देखना पड़े। स्थायी समिति के अध्यक्ष के नाते उनसे मिलने आने वाले हर विदेश मंत्री से वे स्पष्ट कहते थे, ''**भारत में विदेश नीति पर कोई मतभेद नहीं है। हम एकमत हैं। आप मुझसे मिलने आए हैं, मैं ठीक वही कहूंगा जो हमारी सरकार कह रही है। घरेलू नीतियों पर हमारे सरकार से मतभेद हो सकते हैं, उन पर हम टकराते भी हैं, लेकिन विदेश नीति पर हम एक हैं और अपनी सरकार के लिए कभी शर्मनाक स्थिति नहीं आने देंगे।**'' संसद में उनकी नीति थी, ''विपक्ष को अपनी बात रखने का मौका दिया जाना चाहिए, उसके बाद सरकार भी अपनी बात रखे।'' विपक्ष में रहते हुए, वे कहा करते थे, ''हम आपका विरोध करेंगे और आपको हमें सुनना पड़ेगा। इसके बाद आप जो चाहें, तय करें।'' इस तरह वे संसद की मर्यादाओं के प्रति बहुत सचेत रहते थे। आज के राजनीतिज्ञ उनके जीवन से अनेक चीजें सीख सकते हैं। सिर्फ शिकायत करने से बदलाव नहीं आएगा। अपने भीतर झांक कर, बदलाव लाकर, सुनिश्चित करना पड़ेगा कि भारत हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहे।

(लेखक श्री अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में प्रधानमंत्री कार्यालय में कार्यरत थे।)

लोकतंत्र के साधक

अटलजी का जीवन उपलब्धियों का हस्ताक्षर हैं जिसने भारत के समकालीन इतिहास को गहनता से प्रभावित किया

— एन.एम. घटाटे

अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने जीवन के 60 से अधिक वर्ष देश सेवा में लगा दिए, जिसमें पांच दशक तक तो वे सांसद रहे। वे एक अद्‌भुत वक्ता थे, जिनके भाषण को संसद के भीतर और बाहर उनके मित्र और विरोधी ध्यान से सुनते थे। एक सांसद होने के नाते उन्होंने संसद का उपयोग शैक्षणिक मंच के साथ-साथ राजनीतिक हथियार के रूप में किया और संविधान सभा की गरिमा को बढ़ाया है। आलोचना या आवश्यकता पड़ने पर चेतावनी मिलने के बावजूद उन्होंने अपने शब्दों में कटौती नहीं की। लेकिन उनकी आलोचना ने उनके विरोधियों को ठेस नहीं पहुंचाई। पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने वाजपेयी का उल्लेख 'हमारे समय के सबसे उत्कृष्ट सांसद' के रूप में किया है। उनका चुटीला अंदाज व चातुर्य गुणों की उत्कृष्टता संसदीय बहस में जैसे जान फूंक देता था। वे अपने इन प्रतिभाओं का प्रयोग दमदार तरीके से करते थे।

दार्शनिक, कवि और राजनेता

वाजपेयी अक्सर पार्टी से ऊपर रहे और राजनीति से अधिक राष्ट्रहित को प्राथमिकता दी। अपने लंबे संसदीय जीवन के दौरान वे कभी अपनी बात रखने के लिए संसद के 'वेल' में नहीं गए और विपक्ष के अच्छे दृष्टिकोण की हमेशा सराहना की। एक प्रधानमंत्री के तौर पर भी उन्होंने अपनी उत्कृष्टता साबित की। उन्होंने प्रतिबंधों की परवाह किए बिना न केवल भारत की सैन्य शक्ति को परमाणु सम्पन्न बनाया, बल्कि उसी समय अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ करीबी दोस्ताना रिश्ते कायम किए। यहाँ तक कि कारगिल के धोखे के बाद भी जनरल मुशर्रफ की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया और चीन तथा दूसरे पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण रिश्ते स्थापित किए। वे कहा करते थे, ''मैं इतिहास तो बदल सकता हूँ, लेकिन भूगोल नहीं बदल सकता।''

स्वर्णिम चतुर्भुज योजना उनकी घरेलू उपलब्धियों में शामिल है, जिससे गांवों को सड़कों से जोड़ने की शुरुआत की गई। इसके अलावा, चंद्रयान परियोजना, सिंचाई और बाढ़ की समस्या का समाधान निकालने के लिए नदियों को जोड़ना, सस्ती और तेज संचार प्रणाली तथा 4,000 किलोमीटर लंबी तटीय रेखा को जोड़ने के लिए सागरमाला जैसी परियोजनाएं उन्हीं की देन हैं। उन्होंने भारत को खाद्यान्न निर्यातक, बड़ा आउटसोर्सिंग देश और अरबों डॉलर से अधिक विदेशी मुद्रा भंडार देकर समृद्ध किया। हालांकि एक विधि निर्माता के तौर पर उनकी रचनात्मक भूमिका संसद के दस्तावेजों में छिपी हुई है, जिसके बारे में अधिक लोग नहीं जानते। उन्होंने अन्य संसद सदस्यों के तीन या चार विधेयक के मुकाबले 22 विधेयक पेश किए, जिनमें 20 तो विपक्ष में होते हुए पेश किए। वर्तमान और भविष्य के विधि निर्माताओं के लिए यह ध्रुवतारा अनुकरणीय है।

वाजपेयी जी ने जितने विधेयक पेश किए उनमें नौ संविधान संशोधन विधेयक थे, जबकि दो भारत के विदेश मंत्री रहते हुए पेश किए। इससे पता चलता है कि देश के लोकतांत्रिक अधिष्ठान को मजबूत करने के लिए वे कितना कुछ करते थे। लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति, न्यायपालिका की स्वतंत्रता में विश्वास, चुनावों में धन बल पर रोक और इन सबके ऊपर कमजोर और अशक्त लोगों के प्रति सद्‌भावना उनकी खासियत थी।

(लेखक पुस्तक 'अटल बिहारी वाजपेयी-ए कंस्ट्रक्टिव पार्लियामेंटेरियन' के संपादक हैं)

(पृष्ठ ५ का शेष)

वे अपनी कविताओं में समकालीन घटनाओं एवं परिस्थितियों का आकलन एवं विश्लेषण बखूबी करते रहे। उनके मन पर गहरी छाप छोड़ने वाले अथवा उनको व्यथित करने वाले सभी प्रकरणों का बखान कविता के माध्यम से करना अटल जी के व्यक्तित्व का एक अनूठा पहलू रहा है। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में उनकी कविता 'गीत नहीं गाता हूँ' राजनैतिक गलियारों में बहुचर्चित हुई थी। राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन में विपरीत विचारधारा से संबंधित लोगों के साथ व्यक्तिगत जीवन में सहज संबंध बनाए रखना भी अटल जी के अजातशत्रु व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पहलू रहा है। गलत नीतियों पर कठोर प्रहार के लिए उनके शब्दों के तरकश में पैने तीरों की कभी कमी नहीं थी, लेकिन उन्होंने कभी कमर के नीचे वार नहीं किया। बात 1964 की है, जब नेहरू सरकार ने नेशनल कान्फ्रेंस के नेता शेख अब्दुल्ला को रिहा कर पाक अधिकृत कश्मीर जाने की अनुमति दी थी। राज्यसभा में अटल जी ने जिन कड़े शब्दों में सरकार की कश्मीर नीति की आलोचना की थी, उसने पं. नेहरू के देहान्त पर उसी राज्यसभा में उन्हें जिन शब्दों में भावभीनी श्रद्धांजलि दी थी, वह बेमिसाल थी।

राजनैतिक जीवन में पारदर्शिता, व्यक्तिगत जीवन में शुचिता और सरकार में सुशासन, अटल जी के जीवन मूल्य रहे हैं, जिनका पालन करते हुए उन्होंने भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ करने की दिशा में जो योगदान दिया है, उसके लिए यह देश सदा उनका ऋणी रहेगा। मोदी सरकार ने उन्हें 'भारत रत्न' से नवाज कर राजग सरकार की उनके प्रति सच्ची निष्ठा का प्रमाण दिया है।

(लेखक पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के मीडिया सलाहकार रहे हैं)

(पृष्ठ ४ का शेष)

अपनों और विपक्षियों में समन्वय करने की कला को अटल जी बखूबी जानते थे।

एक समय पर जब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अटल जी की तुलना सोनिया गांधी से करने लगे तो भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने इसका बहुत सुन्दर शब्दों में उत्तर दिया 'सोनिया गांधी ने अपने विवाह के लिए अपना देश छोड़ दिया और अटल जी ने देश के लिए अपना विवाह छोड़ दिया।'

अटल जी के सम्पूर्ण राजनीतिक जीवन को शब्दों की एक छोटी सी कटोरी में समेटा नहीं जा सकता। वे एक ऐसे कर्मयोगी थे, जिन्होंने वास्तव में सबको साथ लेकर चलने के मुहावरे को व्यवहार में परिणित कर दिया था। अटल जी महात्मा गांधी के 'ग्राम स्वराज्य', लोहिया के 'समाजवाद' और दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' का सम्मिश्रण थे। स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेजी एक व्यक्ति अथवा एक नेता नहीं थे, वे सर्वस्पर्शी, सर्वग्राहीय और सार्वभौम व्यक्तित्व थे जिसने सभी क्षेत्रों, सभी दलों और सभी विचारधाराओं में अद्‌भुत समन्वय करने में सफलता प्राप्त की। अटल जी को हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि...

ठन गई

मौत से ठन गई।
जूझने का मेरा इरादा न था,
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा न था,
रास्ता रोक कर वह खड़ी हो गई,
यों लगा जिन्दगी से बड़ी हो गई।
मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं,
जिन्दगी सिलसिला, आज कल की नहीं।
मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,
लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ?

— अटल बिहारी वाजपेयी

चर्च द्वारा धर्मान्तरण व अन्य दुष्कृत्यों की जाँच हेतु बने आयोग- विहिप

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद ने कहा कि चर्च व उसके द्वारा संचालित तथाकथित सेवा कार्य धर्मान्तरण ही नहीं, अपितु कई प्रकार के अवैधानिक-अनैतिक कृत्यों के केंद्र बन चुके हैं। इन कुकर्मों का अनेक बार भंडाफोड होने के बावजूद प्रचार तन्त्र व प्रशासन में इनकी गहरी पैठ तथा मदर टेरेसा के, इन्हीं के द्वारा निर्मित आभा-मण्डल के कारण इनके पाप आसानी से छिपाए जाते रहे हैं। परन्तु अब मानवता के सभी मापदंडों को ध्वस्त करते हुए उनके दुष्कर्मों की एक लम्बी श्रृंखला सामने आ रही है। विहिप के केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने केंद्र सरकार से चर्च के पादरियों तथा उनके द्वारा संचालित संस्थाओं की गहन जाँच हेतु एक आयोग बनाने, धर्मान्तरण विरोधी कानून बनाने, पर्यटन के बहाने धर्मान्तरण व धर्म-प्रचार में लिप्त विदेशियों पर शिकंजा कसने व तथाकथित अनाथ आश्रम इत्यादि में पादरियों द्वारा बच्चों व ननों का शोषण किए जाने पर अविलम्ब अंकुश लगाने की मांग की है। मदर टेरेसा द्वारा स्थापित रांची स्थित निर्मल हृदय आश्रम में किए जा रहे यौनाचार, बच्चों के व्यापार व अन्य अवैध कार्यों के पर्दाफाश से पूरी मानवता कराह रही है। आश्रम में अनाथ लड़कियों से दुष्कर्म कर उनके बच्चों को बेच दिया जाता था। केवल इसी आश्रम से गत कुछ दिनों में ही 280 बच्चे गायब हुए हैं। इनमें से कई बच्चों को मरा हुआ घोषित कर दिया जाता था, परन्तु बाद में पता चलता था कि इन्हें तो बेचा जा चुका है। इस आश्रम की गतिविधियों की शिकायत पहले भी की गई थी। किन्तु, षड्यंत्र पूर्वक, जाँच अधिकारी पर ही छेड़खानी का आरोप लगाकर उसे निलंबित करा दिया गया। विश्व हिन्दू परिषद को आशंका है कि, मदर टेरेसा द्वारा स्थापित अन्य तथाकथित आश्रमों में भी इस प्रकार की अवैध गतिविधियों का संचालन होता है। पादरियों की यौन पिपासा की शिकार बनी ननों तथा अनाथ बच्चों के समाचार सम्पूर्ण विश्व से आते ही रहते हैं। यहां तक कि वैटिकन भी इससे अछूता नहीं रहा है। गत कुछ वर्षों से भारत में पादरियों के दुष्कर्मों की संख्या में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हुई है। कुछ दिन पूर्व ही एक नन ने पाँच पादरियों पर आरोप लगाया है कि वे कई वर्षों से उसका यौन शोषण कर रहे थे। कन्फैशन बॉक्स में विवाह पूर्व संबंधों की स्वीकृति के बाद से उस नन को ब्लैक मेल कर ये उसके साथ लगातार दुष्कर्म करते रहे। पीड़िता द्वारा इसकी शिकायत चर्च के वरिष्ठ अधिकारियों से किए जाने पर भी उसे लगातार अनसुना किया जाता रहा। दुष्कर्म पीड़िता कुछ ननें तो आत्म-हत्या तक कर चुकी हैं।

विश्व हिन्दू परिषद केन्द्र सरकार से यह मांग करती है कि, सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में नियोगी कमीशन जैसा एक जाँच आयोग बनाया जाए जो मदर टेरेसा व अन्य मिशनरियों द्वारा स्थापित संस्थाओं की विस्तृत जाँच कर इनके विदेशी

(शेष पृष्ठ १० पर)

तत्व छोड़े बिना जीवनपथ पर बढ़ना है निरंतर

— डॉ. मोहन भागवत

''कार्य का मूल्य, मानवता को ध्यान में रखते हुए मनुष्य को जोड़ना, ये बातें दत्ताजी से सीखें। लोकसंग्रह कैसे किया जाए, यह उनसे सीखना होगा।'' उक्त बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघनालक डॉ. मोहन जी भागवत ने कहीं। वे गत दिनों नागपुर स्थित वसंतराव देशपांडे सभागृह में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद तथा विद्या निधि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर डॉ. मोहन जी ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संस्थापक सदस्य दत्ताजी डिडोलकर के जीवन पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण भी किया।

उन्होंने कहा कि व्यक्ति निर्माण संघ और विद्यार्थी परिषद दोनों का काम है। इसलिए जीवन का ताना-बाना कैसा बुनना चाहिए, यह महत्वपूर्ण है। केवल नारों से, कुछ क्षणिक उत्साह से काम नहीं चलेगा। अपितु खुद तपकर, उनके कठिन प्रसंगों को आघात सहन कर और वेदनाओं को संजोकर उससे सोने जैसा बनकर उत्पन्न हुई मधुरता, तेजस्विता और संस्कारों का वितरण, ऐसा जीवन कार्यकर्ता का होना चाहिए। वास्तविक रूप से यह आसान नहीं है। संकटों का सामना करते हुए, स्वयं को संतुलित बनाए रखना, लेकिन तत्व को छोड़े बिना कठिन मार्ग पर चलना, यही कार्यकर्ता के जीवन की परीक्षा रहती है। उसमें आगे चलकर सफलता भी मिलती है, यश-कीर्ति भी मिलती है। उन्होंने कहा कि कन्याकुमारी स्थित स्वामी विवेकानंद स्मारक निर्माण के समय दत्ताजी ने अपूर्व धैर्य का परिचय दिया। वहां पर स्मारक के निर्माण स्थान पर किसी ने सलीब लगाकर शिला स्मारक को ही चुनौती दी थी। स्व. दत्ताजी ने अभूतपूर्व साहस का परिचय देकर वह जगह सुरक्षित की और शिला स्मारक का काम सुचारू रूप से चला।

डॉ. मोहन जी ने कहा कि आज के युवाओं को ऐसे प्रेरणा पुरुषों के जीवन चरित्र से सीखना चाहिए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी उपस्थित थे। इस मौके पर श्री गडकरी ने भी विद्यार्थी परिषद् और दत्ताजी के संबंधों पर अपने अनुभव सबके साथ साझा किए।

(पृष्ठ ९ का शेष)

फंडिंग, आतंकी संगठनों से इनके सम्बन्ध, हिन्दुओं के प्रति घृणास्पद साहित्य के निर्माण, ननों तथा बच्चों से दुष्कर्म तथा बच्चों के अवैध व्यापार जैसे विषयों पर गहन जांच करे। अवैध धर्मान्तरण व सामाजिक विद्वेष निर्माण के आरोप इन पर लगातार लगते रहे हैं। तूतीकोरन हिंसा की प्रेरणा भी चर्च ही है, ऐसा आरोप भी इन पर है। हिन्दू संतों की हत्या का संदेह भी इन पर व्यक्त किया जाता रहा है। ऐसे विषय भी इस आयोग के कार्यक्षेत्र में हों। अवैध धर्मान्तरण रोकने हेतु धर्म स्वातंत्र अधिनियम बनाया जाए, जिसकी मांग कुछ आयोग तथा हिन्दू समाज निरंतर करता करता रहा है। पर्यटन वीजा पर भारत आकर धर्मान्तरण या धर्म प्रचार में लिप्त विदेशी पर्यटकों का वीजा रद्द कर उनके विरुद्ध कड़ी से कड़ी कानूनी कार्यवाही हो।

केरल : सेवा के अग्रिम मोर्चों पर पहुंचे संघ के स्वयंसेवक

— नरेन्द्र सहगल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हजारों स्वयंसेवक अपनी जान को हथेली पर रखकर केरल में बाढ़ पीड़ितों की सहायता में दिन रात एक किए हुए हैं। इन स्वयंसेवकों ने दूरदराज के ग्रामीण बाढ़ ग्रस्त इलाकों में जाकर सेना के जवानों, अर्धसैनिक बलों और स्थानीय पुलिस का सहयोग करते हुए सेवा के प्राय: सभी कार्यों को सम्भाला है। स्वयंप्रेरणा एवं नि:स्वार्थ भाव से सेवा कार्य में जुटे यह स्वयंसेवक किसी प्रमाणपत्र अथवा राजनीतिक वाहवाही से कोसों दूर हैं।

केरल प्रांत में इस समय लगभग 3700 राहत शिविर चल रहे हैं, जिनमें लगभग 7 लाख लोगों को शरण दी गई है। लोगों को बाढ़ से घिरे हुए घरों से निकालकर राहत शिविरों तक पहुंचाने में संघ के स्वयंसेवक पूरी शक्ति के साथ सक्रिय हैं। केन्द्र की सरकार तथा अन्य प्रांतों की सरकारों द्वारा जो राहत सामग्री (भोजन के पैकेट, पानी की बोतलें, दवाइयों के बंडल, वस्त्र एवं टेंट इत्यादि) भेजी जा रही है। उसे शीघ्रता से जरूरतमंदो तक पहुंचाने में संघ के स्वयंसेवक निरंतर परिश्रम कर रहे हैं।

दुर्गम स्थानों तक पहुंचकर पीड़ितों की यथासंभव प्रत्येक प्रकार की मदद करते हुए आ रही कठिनाईयों का स्वयंसेवक पूरी हिम्मत से सामना कर रहे हैं। अपने कर्तव्य को निभाने वाले ये युवा स्वयंसेवक सैनिकों एवं सरकारी कर्मचारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चुपचाप काम में लगे हुए हैं। संघ के स्वयंसेवकों ने उन लोगों को भी सम्भाला और उनकी रक्षा की है जो संघ एवं स्वयंसेवकों के प्रबल विरोधी एवं शत्रु हैं। जिन साम्यवादी तत्वों ने स्वयंसेवकों का कत्लेआम करने की मुहिम चलाई हुई है, उनके परिवारों तक भी पहुंचकर उनकी सहायता कर रहें हैं संघ के स्वयंसेवक। केरल के हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई इत्यादि समुदायों के पीड़ित लोगों की संघ के स्वयंसेवक बिना किसी भेदभाव के सेवा कर रहे है। संघ को जी भर कर गलियां निकालने वाले दलों एवं संस्थाओं से पूछना चाहते हैं कि संकट की इस घड़ी में उनके कितने सदस्य केरल में गए है? दिन में कई बार आर.एस.एस. को कोसने वाले राहुल गांधी के कितने साथी केरल में सेवा के लिए पहुंचे हैं, जरा बताएं? केरल में देश के कोने-कोने से सहायता पहुंच रही है। केन्द्र सरकार ने भी सहायता देने में कोई कसर नहीं छोड़ी परन्तु केरल में बाढ़ पीड़ित लोगों की सेवा न करके, सेवा के लिए लगे हुए लोगों पर राजनीति करने वाले दल एवं नेता जरा अपनी जान को जोखिम में डालकर वहां जा करके तो देखें।

उल्लेखनीय है कि संघ के स्वयंसेवक ऐसी किसी भी प्राकृतिक आपत्ति और संकट के समय पीड़ितों और सैनिकों की सहायता के लिए सबसे पहले पहुंच जाते हैं, यही अंतर है देशभक्त स्वयंसेवकों और सत्ता के भूखे संघ विरोधियों में।

जल संरक्षण की पहल उचित दिशा में हो

— बिसराराम यादव

पिछले महिने रायपुर के जल-आपूर्ति-पाईप में लिकेज की वजह गंदे पानी के मिलाने से रायपुर नगर निगम पीलिया के प्रकोप से जूझ रहा था और कुछ दिनों पूर्व जल सप्लाई की कमी को लेकर पार्षद-गणों का धरना भी चर्चित रहा। वाल्व की खराबी व सिंचाई विभाग द्वारा समय पर कम सप्लाई के कारण जल आपूर्ति में कमी होना बताया गया।

रायपुर नगर निगम की प्राय: 25 लाख आबादी के लिए पेयजल आपूर्ति व्यवस्था के लिए मात्र निगम पर निर्भरता एकांगी है। स्वाभाविक रूप से पाईप लिकेज होगा, वाल्व खराब होगा, मोटर भी खराब होगी तथा बिजली के कारण भी जल आपूर्ति में समय-समय पर बाधा आयेगी। निर्दोष व सम्पूर्ण व्यवस्था, बिना समाज के भागीदारी के संभव नहीं।

भू-गर्भ का जल स्रोत रायपुर सहित सम्पूर्ण प्रांत में तीव्र गति से नीचे जा रहा है, ऐसी स्थिति में पानी का उपयोग कम से कम करने के सिवाय समाज की क्या भागीदारी हो सकती है?

सन् 1984-85 के दौरान जब रायपुर के रजबंधा व लेडी तालाब आदि शहर बसाने के लिए पाटे जा रहे थे, तब मैंने एक भाषण में कहा था कि यदि इसी तरह तालाब पाटे जाते रहे तो आगे चलकर रायपुर नगर पेयजल के संकट से जूझेगा और तब से न जाने कितने तालाब समतल कर दिये गये तथा तालाब के कैचमेंट एरिया पर बेजा कब्जा हो गया, जिसके कारण शेष सूखे तालाब निगम क्षेत्र के भू-जल स्तर को ऊँचा करने में समर्थ नहीं है। रायपुर का जल स्रोत 700 से 1000 फीट नीचे चला गया है, हालांकि इन दिनों रायपुर शहर के कुछ तालाबों पर संधारण के प्रयत्न दिखते है, किन्तु वर्षा जल से भराव न होने के कारण तालाबों से उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पा रही है।

रायपुर शहर के मध्य में बनी हुई महानदी मुख्य नहर की मांढर वितरक शाखा, जो रायपुर निगम क्षेत्र के बनरसी गांव से शुरू होकर कन्हेरा गांव (लगभग 50 गांव) तक 29.66 कि.मी. निकाली गई थी और जिसमें जल प्रवाहित होने पर निगम क्षेत्र के 3/4 धरती का हिस्सा चार्ज हुआ करता था, जो लिंकिंग रोड बनाने के कारण बंद हो गया है तथा समाज द्वारा निजी व सार्वजनिक कुएँ तथा बोरिंग से जल आपूर्ति बाधित हुई है, जो रायपुर नगर निगम क्षेत्र में पेयजल संकट का एक प्रमुख कारण है।

रायपुर नगर निगम-पेयजल-आपूर्ति-समस्या व निदान

1. निगम सीमा अंतर्गत नये-पुराने तालाबों का संधारण करके उसके भराव क्षेत्र से बाधा हटाना चाहिए व तालाब में बरसाती पानी का भराव हो सके इसका सुनिश्चयन हो।
2. अभी भी टेमरी, बनरसी, बोरिया कला, सेजबहार, डोमा, दतरेंगा, देवपुरी, डुमरतराई, डूंडा, कान्दूल तथा लालपुर के तालाबों में नहर द्वारा पानी पहुँचाया जा सकता है। अत: इनका उचित संधारण होकर पानी भराव की व्यवस्था हो।
3. रायपुर नगर के पश्चिम दिशा में खारून नदी व पूर्व में कोन्हान जमनई व खोरसी नाला है जिससे होकर वर्षा का जल सोमनाथ के पास शिवनाथ नदी में जाता है। इस नदी व नालों के वर्षा के जल को जगह-

जगह रोककर बहने देना चाहिए तथा किनारे रेनहार्वेस्टींग के तर्ज पर गहरे कुओं द्वारा धरती के गर्भ में पानी पहुँचाना चाहिए व जगह-जगह इंटकवेल से शहर में जल आपूर्ति की व्यवस्था की जानी चाहिए।

उद्योगों को भी जल की आपूर्ति इन्हीं नदी व नालों में एनीकेट बनाकर इंटकवेलों द्वारा ही पानी लेने के लिए अनिवार्य करना चाहिए।

4. पैरी उच्च बांध परियोजना जो गरियाबंद जिले के ग्राम बारूका के समीप प्रस्तावित है, से नहर निर्माण कर महानदी पर निर्मित रूद्रीबैराज से जोड़ा जाना आवश्यक है, जिससे नये रायपुर सहित रायपुर जिले को पर्याप्त जल की आपूर्ति हो सके तथा गंगरेल बांध के पानी का उपयोग, न केवल रायपुर जिला वरन् गरियाबंद, बलौदा बाजार, बालोद, दुर्ग तथा बेमेतरा की खेती व पेयजल आपूर्ति में उपयोग किया जा सके।
5. रायपुर नगर निगम क्षेत्र में रेनहार्वेस्टींग को बिल्डिंग बनाने की अनुमति के साथ कठोरता से पालन किया जाना चाहिए।

छत्तीसगढ़ प्रांत का भू-जलस्तर व सुधार

रायपुर नगर ही नहीं वरन् पूरे प्रदेश का भू-जल स्तर गति से नीचे जा रहा है। मैदानी भाग ही नहीं वरन् बस्तर व सरगुजा क्षेत्र का भी जल स्तर 400 से 500 फीट नीचे चला गया है, जिसका प्रमुख कारण धरती के गर्भ में बिना पानी पहुँचाएं गाँव-गाँव में जल आपूर्ति के लिए नलकूपों द्वारा जल का अंधाधूंध दोहन है, जिससे न केवल खेती अलाभप्रद हो रही है, वरन् दिनों दिन तापमान में वृद्धि होकर प्रकार-प्रकार की बीमारियों का प्रमुख कारण बन गया है।

छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के प्रत्येक गाँव में 10-20 तालाब व प्रत्येक घर में कुआँ हुआ करते थे, जिसके द्वारा भू-गर्भ में वर्षा का जल संग्रहित होता था, जिससे प्रत्येक गाँव हरा-भरा, फल-पौधे, सब्जी-भाजी से लदा हुआ रहता था तथा कम लागत में फसल हो जाया करती थी, जो निवासियों के स्वस्थ शरीर व मस्त मन का कारण था, किन्तु अब तो रूखी सूखी धरती, उदास व हताश मन, मात्र सरकार की कृपा पर अवलंबित, पुरुषार्थहीन छत्तीसगढ़ गति से विकसित हो रहा है।

छ.ग. में कोयला, बॉक्साईड, चूना पत्थर व लोहा आदि खनिज सम्पदा की उपलब्धता का प्रमुख कारण भी वर्षा के जल को धरती के गर्भ में तालाब आदि के द्वारा पहुँचाने की व्यवस्था के कारण रही है। छ.ग. की धरती, प्रकृति व जनता के आसपास उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखकर विकास का रास्ता गढ़ना अब छत्तीसगढ़ की आवश्यकता है और वह रास्ता जल संरक्षण से होकर जायेगा।

छत्तीसगढ़ में जल संरक्षण

1. छ.ग. के समस्त तालाबों (निजी, सार्वजनिक) का योग्य संधारण होकर जल भराव का सुनिश्चयन हो।

   वर्षाकाल में जलाशयों के अतिरिक्त पानी से समस्त तालाबों को लबालब रखे जाने से जलस्तर बढ़ेगा।
2. नदी नालों में एनीकट की व्यवस्था हो तथा इसका समय-समय पर योग्य संधारण व देखरेख की स्थायी व्यवस्था हो।
3. छ.ग. के जो गाँव मैदानी व पठारी क्षेत्र में स्थापित है, उनकी बसाहट ऊँचाई पर है तथा गाँव की तराई पर नदी नाले रहते ही है, ऐसे नदी नालों में इनटकवेल से गाँव के पेयजल की आपूर्ति की व्यवस्था हो।

   इस व्यवस्था को उद्योगों को पानी देने में कठोरता से पालन किया जाना चाहिए।
4. धान की खेती से भी जल संरक्षण होता है इसलिए धान का रकबा कम न हो तथा खेतों के लिए जलाशय से पानी देने की समुचित व्यवस्था हो।
5. पहाड़ी क्षेत्रों के नदी-नालों के पानी बहाव की गति तीव्र होने के कारण एनीकेट व बँधान की संभावना कम रहती है। अत: पहाड़ के तलहटी पर ही वर्षा के

(शेष पृष्ठ १४ पर)

शोक संवेदना

गत मास में हुए निधन के दु:खद प्रसंग पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उनके समस्त परिवार जनों एवं स्नेहों जनों के प्रति इस दु:खद घड़ी पर अपनी शोक संवेदनाएँ प्रकट की और सभी स्वयंसेवकों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की है।

- **श्री बलरामजी दास टंडन**
  निधन – 14 अगस्त 2018
  छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रहते हुए निधन हुआ, पंजाब चंडीगढ़ से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे।

- **श्रीमती रूखमणी यादव**
  निधन – 16 अगस्त 2018
  राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ छत्तीसगढ़ प्रान्त के सह कार्यवाह श्री गोपाल यादव जी की माताजी थी।

- **श्री दामोदर दास सिन्हा**
  निधन – 17 अगस्त 2018
  रा.स्व. संघ, दुर्ग विभाग कार्यवाह श्री पूर्णेन्द्र सिन्हा जी के पिताजी थे।

- **श्री अटल बिहारी वाजपेयी**
  निधन – 16 अगस्त 2018
  राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक थे। भारतीय जनता पार्टी के प्रथम अध्यक्ष, देश के प्रधानमंत्री रहे। दार्शनिक, कवि, साहित्यकार, राजनेता और कई प्रतिभा के धनी भारत के मानस पटल पर अपनी अद्‌भूत छाप छोड़कर गए। उन्हें भारत के सर्वोच्च ''भारत रत्न'' से नवाजा गया।

- **श्री रोशनलाल सक्सेना**
  निधन – 21 अगस्त 2018
  राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक थे। सरस्वती शिशु मंदिर योजना के संस्थापक सदस्य, विद्या भारती मध्यक्षेत्र के मार्गदर्शक रहे, जिन्होंने मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के दूरस्थ अंचलों में सरस्वती शिशु मंदिरों की स्थापना, संचालन व विस्तार के लिए अनथक परिश्रम किया।

- केरल में आयी अप्रत्याशित बाढ़ विभीषिका में सैंकड़ों की असामयिक मृत्यु हुई, इसमें रा. स्व. संघ के आह्‌वान पर बड़ी संख्या में स्वयंसेवक राहत कार्य में जुटकर सेवा कार्य कर रहे है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, छत्तीसगढ़ प्रान्त, प्रचार विभाग की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

(पृष्ठ १३ का शेष)

पानी को मिट्‌टी या सीमेंट के दीवार से रोक कर नदी नालों में जाने दिया जाये, जिससे तलहटी के नीचे के गाँवों का जलस्तर बढ़ेगा और दलहन, तिलहन की फसल पर्याप्त होगी। स्वच्छ पेयजल मिलने से लोगों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

6. बालोद जिले का जल स्तर अच्छा है इसका कारण खरखरा व आदमावाद (तान्दुला) जलाशय है। उसी तरह गंगरेल बांध के कारण धमतरी जिला तथा कांकेर जिला (नरहरपुर, गीदम) का जलस्तर अच्छा है तथा सिकासेर जलाशय के कारण गरियाबंद जिले का जलस्तर संतोषजनक है, इसलिए प्रदेश के लंबित सिंचाई परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करते हुए नहर निर्माण द्वारा खेतों तक पानी पहुँचाने का अभियान चलाया जावें।

खंड वर्षा पर दृष्टि रखते हुए छत्तीसगढ़ की नदियों को जलाशयों के माध्यम से जोड़ने के कार्य को प्राथमिकता में लेना चाहिए।

प्रथम चरण में पैरी नदी को जोक व महानदी से तथा महानदी को तान्दुला से जोड़ा जा सकता है।

(लेखक, रा.स्व. संघ के प्रान्त संघचालक है)

कृषि कार्य हेतु हरी खाद है लाभकारी

कृषि कार्य हेतु जैविक खाद का प्रयोग करें। जैसे गोबर की खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद आदि का उपयोग कर सकते हैं। इनमें हरी खाद सबसे सरल व अच्छा प्रयोग है। पशुधन में आयी कमी के कारण किसानों को गोबर की उपलब्धता पर भी निर्भर रहने की आवश्यकता काफी कम रह जाती है। सघन कृषि पद्धति के विकास तथा नगदी फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल बढ़ने के कारण हरी खाद के प्रयोग में निश्चित ही कमी आई है लेकिन बढ़ते ऊर्जा संकट, उर्वरकों के मूल्यों में वृद्धि तथा गोबर की खाद की सीमित आपूर्ति से आज हरी खाद का महत्व बढ़ गया है।

क्या है हरी खाद ?

दलहनी एवं अदलहनी फसलों को हरी अवस्था में मृदा में जीवांश पदार्थ एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाने के उद्देश्य से खेत में जुताई कर दबाने की प्रक्रिया को हरी खाद कहते हैं। यह एक प्रकार का जैविक खाद हैं जो कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ाकर मृदा की भौतिक–रासायनिक स्थिति को सुधारती है तथा विभिन्न पोषक तत्वों की उपलब्धता को बढ़ाती है।

हरी खाद के लाभ :

1. मृदा की संरचना में सुधार होता है।
2. मृदा की जैविक क्रियाशीलता बढ़ती है। फलस्वरूप मृदा में उपलब्ध पोषक तत्वों की पौधों के लिए उपलब्धता बढ़ती है।
3. दलहनी फसलें वातावरणीय नत्रजन का स्थिरीकरण कर मृदा में नत्रजन की आपूर्ति करती हैं।
4. मृदा की जलधारण क्षमता बढ़ती है।
5. हरी खाद मिट्टी में गहरी जड़े विकसित करती है जिसके कारण मिट्टी में वायु संचार अच्छा हो जाता है।
6. हरी खाद पोषक तत्वों को विक्षालन व अन्त: स्त्राव से बचाता है।
7. वर्षा जल का अन्त: स्त्राव को बढ़ाकर जल प्रवाह व मृदा क्षरण को कम करता है।
8. हरी खाद की फसल को मृदा में दबाने से अनेक कार्बनिक अम्ल पैदा होते हैं, जो मृदा की क्षारीयता कम करने में सहायक होती है तथा हरी खाद की फसलें वाष्पीकरण को रोककर भी क्षारीय मृदा के निर्माण को रोकती है।
9. हरी खाद वाली फसल शीघ्र वृद्धि करके खरपतवार के पौधों को प्रकाश नहीं पहुंचने देती है तथा मृदा से जल व पौषक तत्वों को ग्रहण करके शीघ्र ही खरपतवारों को नष्ट करने में सहायता करती है।
10. हरी खाद के उपयोग से रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते हुए खर्च को कम किया जा सकता है।
11. हरी खाद की फसलों के विच्छेदन से कार्बन डाईऑक्साइड बनती है जो पानी से मिलकर कार्बनिक अम्ल बनाती है एवं मृदा में फॉस्फोरस, कॉपर, मैंगनीज लोहा तथा जस्ता आदि की प्राप्यता को बढ़ाती है।

सामान्यत: ढेंचा, लबिया, उड़द, मूँग, ग्वार, बरसीम एवं सनई इत्यादि फसलें हरी खाद बनाने के लिये अनुकूल है। दलहनी या फलीदार फसलें हरी खाद के लिए अधिक उपयुक्त रहती है, क्योंकि इन फसलों की जड़ों की ग्रन्थियों में उपस्थित राईजोबियम जीवाणु वायुमण्डल से नाईट्रोजन ग्रहण करते है। साथ ही इन फसलों की वानस्पतिक बढ़वार भी अच्छी होती है तथा इनकी जड़े भी गहरी जाती हैं व फसल अवधि भी कम होती है। इनमें से सनई एवं ढेंचा अधिक उपयुक्त पाई गयी है। सितम्बर माह में रबी फसलों हेतु बरसीम व मटर को हरी खाद के रूप में लगा सकते हैं।

केरल में बाढ़ विभीषिका पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भैयाजी का आह्वान

केरल राज्य एक अभूतपूर्व, अप्रत्याशित बाढ़ की विभीषिका का सामना कर रहा है, जिसमें सैंकड़ों लोगों की जानें जा चुकी हैं, हजारों लोगों को बेघर होना पड़ा है और लाखों लोग अनेक स्थानों पर फंसे हुए हैं, केरल राज्य आज एक भयानक संकट के कगार पर है।

अनेक बाधाओं के बावजूद हमारी सेना, राष्ट्रीय आपदा राहत बल, केंद्र व राज्य सरकार बाढ़ राहत के लिए युद्ध स्तर पर कार्य कर रहे हैं, इनके साथ-साथ बड़ी संख्या में आमजन, संघ के स्वयंसेवक, सेवा भारती और अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं स्वयंसेवी संगठन अपनी जान को जोखिम में डालते हुए पीड़ितों के लिए बचाव और राहत के कार्य में दृढ़तापूर्वक सहयोग कर रहे हैं, उनकी तत्परता और सेवा प्रशंसनीय हैं।

लेकिन संकट विकट हैं, साधन सीमित हैं, इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ धार्मिक, सामाजिक संगठनों, समस्त राष्ट्रजनों से आह्वान करता है कि संकट की इस घड़ी में हम केरल वासियों के साथ खड़े हों और बाढ़ पीड़ितों की बढ़-चढ़ कर हर संभव सहायता करें।

(भैयाजी जोशी, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

सहायता सामग्री

DESEEYA SEVABHARATHI KERALAM

LIST OF NECESSITIES FOR THE FLOOD RELIEF CAMPS IN KERALA.

Cloths
- Bed sheets
- Bathing towel (Thorthu)
- Sleeping mats
- Blankets
- Bed sheets
- Pillow
- Clothes for Adults (Maxi, Mund, Pants Shirt, inner garments)
- Clothes for children's
- Clothes for kid's

Food Items
- Rice
- Sugar
- Salt
- Vegetables
- Food grains
- Cooking Oil
- Rusk (No Bread)
- Biscuits (No cream biscuits)
- Water (ONLY 20 ltrs cans)
- Tea/coffee powder
- Pulses

Medicines

School Kit for kids:
- School bag
- Notebooks
- Pencil box
- Pens

Cleaning materials
- Bleaching powder
- Mop
- Phenol / Dettol
- Brush
- Cleaning Liquids

Other
- ORS packets/ electrolytes
- Mosquito's repellents/Odomos
- Anti-Septic lotion
- Anti-fungal powder
- Baby Diapers
- Adult Diapers
- Sanitary napkins,
- Toothpaste
- Tooth brushes
- Body soap
- Washing soap
- Candles
- Match box

SEVABHARATHI
STATE LVEL FLOOD RELIEF MATERIAL COLLECTION CENTRE, KERALA

Sl No	Collection Centre	Address	Contact Person	Contact Number
1	Kasargod	Vivenkananda Vidhyalayam, Devan Road, Kanhangad, Kasargod, Kerala 671315	M Thampan	9207668610
			Sreejith	8547043672
2	Palakkad	SV Rice Mill, Neyar Post Office, Ottapalam Road, Kallekadu, Palakkad, Kerala - 678006	Sudheer	9961984489
			Soman	9447375415
3	Trivandrum	Govt Fort High School, West Fort, Near SP Hospital, Trivandrum, Kerala 695023	Suresh	8547618883
			Balamuraly	9995518852

केरल बाढ़ पीड़ितों की सहायता करें

SEVA BHARATHI KERALAM

Bank Account :

Deseeya Seva Bharathi Keralam
Dhanlaxmi Bank, SL Puram Branch
Bank A/c No. : 002700100040740
IFSC : DLXB0000027

Contact :

Shri Shiju AV (Mob. : 9496849343)
Rashtreeya Bhavan, Thodankulangara,
Thathampilli PO, Alapuzha District
Pincode 688103

Contact No. :

04872336063, 08330083324

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

50 लाख स्मार्टफ़ोन से जुड़ेगा छत्तीसगढ़ का कोना-कोना

SKY जैसी बड़ी दूरदर्शी योजना शुरु करने वाला छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य

- पहले **6 माह** मिलेगा **1 GB डाटा** और **100 कालिंग मिनट फ्री** (हर माह)
- राज्य भर में **1600 मोबाइल टावर** लगाए जायेंगे
- **महिलाओं** को सूचना की ताकत के साथ-साथ मिलेगी **आर्थिक** और **सामाजिक आत्मनिर्भरता**
- सरकार के हर **फैसले** में बनेगी जनता अब भागीदार
- **खेती, रोज़गार** एवं **शिक्षा** के विस्तार में मिलेगी अत्यंत मदद
- शिक्षा, स्वास्थ्य, राशन जैसी बुनियादी सुविधायें पहुंचाने में **अवल छत्तीसगढ़ शासन, अब डिजिटल क्रांति** से कर रही है नागरिकों का सशक्तिकरण

संचार क्रांति योजना

जुड़ता छत्तीसगढ़
बढ़ता छत्तीसगढ़

अन्य जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर

155309

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

DPR Chhattisgarh | ChhattisgarhCMO

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

यादवराव जोशी
जयंती ०३ सितम्बर

दादाभाई नौरोजी
जयंती ०४ सितम्बर

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
जयंती ०५ सितम्बर

संत विनोबा भावे
जयंती ११ सितम्बर

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया
जयंती १५ सितम्बर

लक्ष्मणराव ईनामदार
जयंती २१ सितम्बर

रामधारी सिंह दिनकर
जयंती २३ सितम्बर

पं. दीनदयाल उपाध्याय
जयंती २५ सितम्बर

अशोक सिंहल
जयंती २७ सितम्बर

सुरेशराव केतकर
जयंती २८ सितम्बर

अटल बिहारी वाजपेयी जी की याद में अभूतपूर्व सर्वदलीय श्रद्धांजलि सभा, नई दिल्ली - २० अगस्त २०१८

प्रेषक,
शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - सितम्बर २०१८

प्रति,

.....

.....

.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर
शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427